Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVII, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

बाँदा जिले में शिक्षा और जनसंख्या स्थिरीकरण : एक सहसंबंध विश्लेषण

अंकिता चौरसिया*

* शोधार्थी, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ.प्र.) भारत

शोध सारांश – इस शोध पत्र में उत्तर प्रदेश के बाँदा जिले में शिक्षा (विशेषकर महिला शिक्षा) और जनसंख्या स्थिरीकरण के बीच संबंधों का गहन विश्लेषण किया गया है। वर्ष 2011 की जनगणना और क्षेत्रीय सर्वेक्षण आँकड़ों के विश्लेषण से पता चलता है कि जिले की साक्षरता दर 66.67 प्रतिशत है जिसमें महिला साक्षरता दर 51.27 प्रतिशत ही है जो प्रजनन दर (TFR) और जनसंख्या वृद्धि (17.06 प्रतिशत दशकीय) पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालती है। जिले की शिक्षित महिलाएँ विवाह एवं गर्भधारण में देरी करती हैं, साथ ही परिवार नियोजन के आधुनिक उपायों को अपनाती हैं, जिससे TFR में कमी आती है। वहीं, निम्न आय, सामाजिक–सांस्कृतिक बाधाएँ (जैसे लैंगिक असमानता और पारंपरिक मान्यताएँ) तथा शैक्षणिक बुनियादी ढाँचे की कमी जनसंख्या नियंत्रण को चुनौतीपूर्ण बनाती हैं। स्कूली पाठ्यक्रम में जनसंख्या शिक्षा को शामिल करने, लड़कियों की शिक्षा तक पहुँच बढ़ाने और सामुदायिक जागरूकता अभियानों के माध्यम से जनसंख्या स्थिरीकरण की दिशा में प्रभावी कदम उठाए जा सकते हैं। महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण और स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार को इस प्रक्रिया का अभिन्न अंग माना गया है। इस प्रकार शिक्षा नीतियों और जनसंख्या नियंत्रण कार्यक्रमों के समन्वय से ही बाँदा जिले में टिकाऊ विकास लक्ष्यों की प्राप्ति संभव है।

शब्द कुंजी – महिला शिक्षा, प्रजनन दर, जनसंख्या नियंत्रण, लैंगिक असमानता, सामाजिक–आर्थिक कारक।

प्रस्तावना – भारत में जनसंख्या स्थिरीकरण और शिक्षा के बीच संबंध एक महत्वपूर्ण सामाजिक–आर्थिक विषय रहा है, विशेषकर उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में, जहाँ जनसंख्या वृद्धि दर राष्ट्रीय औसत (17.70 प्रतिशत) से अधिक (20.20 प्रतिशत) है। बाँदा जिला, उत्तर प्रदेश का एक पिछड़ा क्षेत्र, इस संदर्भ में एक प्रमुख उदाहरण है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार, यहाँ की जनसंख्या 17.99 लाख है, जिसमें 17.05 प्रतिशत की दशकीय वृद्धि दर और 863 का बाल लिंगानुपात राज्य के औसत से नीचे है। इसके साथ ही, 68.11 प्रतिशत की साक्षरता दर और महिला साक्षरता में गहरी खाई (51.27 प्रतिशत महिला Vs 70.36 प्रतिशत पुरुष) इस जिले की सामाजिक–आर्थिक विषमताओं को उजागर करती है।

जनसंख्या विस्फोट और शिक्षा के अभाव के बीच संबंध वैश्विक स्तर पर सिद्ध हो चुका है। यूनिसेफ और WHO के अध्ययनों के अनुसार, महिला शिक्षा में एक वर्ष की वृद्धि, प्रजनन दर (TFR) में 5–10 प्रतिशत की कमी ला सकती है। बाँदा जिले में यह संबंध और भी गहरा है, जहाँ ग्रामीण क्षेत्रों में महिला साक्षरता 50 प्रतिशत से कम है और TFR 3.2 (राज्य के औसत 2.7 से अधिक) है। इसके पीछे निम्न आय, पारंपरिक मान्यताएँ और स्वास्थ्य सेवाओं तक सीमित पहुँच प्रमुख कारक हैं।

इस शोध का उद्देश्य बाँदा जिले के संदर्भ में शिक्षा (विशेषकर महिला शिक्षा) और जनसंख्या स्थिरीकरण के बीच सहसंबंध का विश्लेषण करना है। यह अध्ययन निम्न परिकल्पनाओं पर केंद्रित है।

1. क्या शिक्षा का स्तर, विशेष रूप से महिलाओं में, प्रजनन दर और जनसंख्या वृद्धि को प्रभावित करता है?
2. सामाजिक–आर्थिक और सांस्कृतिक कारक इस संबंध को किस प्रकार मध्यस्थ करते हैं?
3. जनसंख्या नियंत्रण के लिए शिक्षा आधारित हस्तक्षेप कितने प्रभावी हो सकते हैं?

इस शोध की प्रासंगिकता इस तथ्य में निहित है कि बाँदा जिला उन क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करता है जहाँ शिक्षा और जनसंख्या नीतियों का समन्वय टिकाऊ विकास लक्ष्यों SDG 4 प्रतिशत गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और SDG 3 प्रतिशत स्वस्थ जीवन) की प्राप्ति के लिए अत्यंत आवश्यक है। इस अध्ययन के निष्कर्ष से स्थानीय नीति निर्माताओं, राष्ट्रीय स्तर पर जनसांख्यिकीय चुनौतियों के लिए मार्गदर्शक सिद्ध होंगे।

साहित्य समीक्षा

बाँदा जिला, उत्तर प्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र में स्थित, एक पिछड़ा कृषि–प्रधान क्षेत्र है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार, यहाँ की जनसंख्या 17,99,410 है, जिसमें 68.11 प्रतिशत साक्षरता दर और 863 का बाल लिंगानुपात दर्ज किया गया। महिला साक्षरता दर (51.27 प्रतिशत) पुरुषों (70.36 प्रतिशत) से काफी कम है, जो लैंगिक असमानता और शिक्षा तक पहुँच में भेद को प्रतिबिंबित करता है। यह अंतर ग्रामीण क्षेत्रों में और अधिक स्पष्ट है, जहाँ महिला साक्षरता 50 प्रतिशत से भी नीचे है। जनसंख्या वृद्धि दर (17.05 प्रतिशत दशकीय) और उच्च प्रजनन दर (TFR 3.2) राज्य के औसत से अधिक है, जो शिक्षा के सीमित प्रसार और सामाजिक–आर्थिक चुनौतियों से जुड़ा हुआ है।

वैश्विक अध्ययनों के अनुसार, शिक्षा विशेषकर महिला शिक्षा जनसंख्या स्थिरीकरण का प्रमुख निर्धारक तत्व है। बाँदा के संदर्भ में यह संबंध और भी स्पष्ट है कि शिक्षित महिलाएँ विवाह और गर्भधारण में देरी

करती हैं तथा परिवार नियोजन के आधुनिक उपायों को अपनाती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में निम्न महिला साक्षरता (49.27 प्रतिशत) उच्च TFR से सीधे जुड़ी है। निम्न आय वाले परिवारों में बच्चों की संख्या अधिक पाई गई है। शिक्षा के अभाव में ये परिवार जनसंख्या नियंत्रण के महत्व को कम समझते हैं। महिलाओं की शिक्षा तक पहुँच सीमित होने के पीछे पारंपरिक मान्यताएँ और समाज में उनकी भूमिका को कम आँकना प्रमुख कारण हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में स्कूलों और स्वास्थ्य केंद्रों की कमी शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच को प्रभावित करती है। जनसंख्या नियंत्रण उपायों के प्रति संदेह और सामुदायिक प्रतिरोध भी एक चुनौती है।सरकारी रिपोर्ट्स के अनुसार, स्कूली पाठ्यक्रम में जनसंख्या शिक्षा को शामिल करने से छात्रों में छोटे परिवार के फायदों की समझ बढ़ी है।पंचायत स्तर पर कार्यक्रमों के माध्यम से परिवार नियोजन और स्वास्थ्य सेवाओं का प्रचार किया गया है, लेकिन इनकी पहुँच अभी भी सीमित है।ममहिलाओं को रोजगार से जोड़ने की योजनाएँ (जैसे स्वयं सहायता समूह) आंशिक सफलता दर्शाती हैं, परंतु इन्हें व्यापक स्तर पर लागू करने की आवश्यकता है।मबाँदा के 84.68 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है, जहाँ ये सुविधाएँ विशेष रूप से दुर्लभ हैं।म

वर्ष 2011 के बाद से जिले का विस्तृत जनसांख्यिकीय अध्ययन उपलब्ध नहीं है, जो नवीनतम रुझानों के विश्लेषण में बाधक है।अधिकांश शोध राज्य या राष्ट्रीय स्तर पर केंद्रित हैं, जबकि बाँदा जैसे पिछड़े जिलों की विशिष्ट चुनौतियों पर ध्यान कम दिया गया है।शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं के बीच समन्वय की कमी के कारण नीतियों का प्रभाव सीमित रहा है।

विधि – इस अध्ययन में मिश्रित-पद्धति (Mixed-Methods) का उपयोग किया गया है, जो मात्रात्मक और गुणात्मक आँकड़ों के संयोजन से शिक्षा और जनसंख्या स्थिरीकरण के सहसंबंधों को समझने पर केंद्रित है। यह दृष्टिकोण सांख्यिकीय विश्लेषण के साथ-साथ सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों की गहन समझ प्रदान करता है।जिसके लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त आँकड़ों का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक आँकडों के लिएबाँदा जिलेकी 8 विकासखण्डों में से प्रत्येक विकासखण्ड से 10 ग्रामों का चयन जनसंख्या को आधार मानकर 'स्तरित प्रतिचयन विधि' से किया गया है जिसमें 80 ग्रामों का चयन किया गया। पुन: प्रत्येक ग्राम से 05 परिवारों का चयन 'यादृच्छिक प्रतिचयन विधि' से किया गया जिसमें 400 परिवारों को (95 प्रतिशत विश्वास स्तर और 5 प्रतिशत त्रुटि सीमा के साथ) न्यादर्श में शामिल किया गया है। इन परिवारों का चयन करते समय इस बात का ध्यान रखा गया है कि सम्पूर्ण जिले से हो। इस प्रकार न्यादर्श में 400 परिवारों से अनुसूचीतथा साक्षात्कार के माध्यम से आँकड़ें एकत्रित किये गये हैं जो सम्पूर्ण जिले का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं।

जिले के चयनित परिवारों से जनसंख्या नियंत्रण, शिक्षा की भूमिका और सांस्कृतिक बाधाओं पर चर्चा की गई। इसके अतिरिक्त महिलाओं की शिक्षा स्तर (निरक्षर, प्राथमिक, माध्यमिक, उच्चतर), आयु समूह (15-25, 26-35, 36-49 वर्ष) और आर्थिक वर्ग (बी.पी.एल./ए.पी.एल परिवार) को शामिल किया गया। मात्रात्मक विश्लेषण के लिए SPSS और MSExcel का उपयोग करते हुएपियर्सन सहसंबंध गुणांक का प्रयोग किया गया जिससे शिक्षा स्तर और TFR के बीच सह-संबंध ज्ञात किया गया है।रिग्रेशन विश्लेषण के माध्यम से जनसंख्या वृद्धि पर शिक्षा, आय और सामाजिक कारकों के प्रभाव का मूल्यांकन किया गया है।काई-स्क्वायर टेस्ट के माध्यम से लैंगिक असमानता और शिक्षा तक पहुँच के बीच सह-संबंध ज्ञात किया गया है।

थीमैटिक विश्लेषण (Thematic Analysis) के लिए FGDs और साक्षात्कारों से प्राप्त आँकड़ों को कोड करके प्रमुख थीम्स (जैसे सांस्कृतिक बाधाएँ, नीतिगत अंतराल) की पहचान की गयी है।सरकारी नीतियों और मीडिया रिपोर्ट्स में शिक्षा-जनसंख्या संबंधी प्रस्तुतियों का अध्ययन किया गया है।बाँदा जिले में स्कूलों, स्वास्थ्य केंद्रों, और जनसंख्या घनत्व के भौगोलिक वितरण को Arc GIS सॉफ्टवेयर के माध्यम से मानचित्र में दर्शाया गया है।

जिले के सभी प्रतिभागियों को शोध के उद्देश्य और आँकड़ों के उपयोग के बारे में जानकारी दी गई है। सभी प्रतिभागियों की पहचान और आँकड़ों को गोपनीय रखा गया है। नमूना चयन और आँकड़ों के विश्लेषण में लैंगिक और सामाजिक संतुलन सुनिश्चित किया गया। वर्ष 2011 के जनगणना आँकड़ों पर निर्भरता है जो वर्तमान रुझानों को सीमित रूप से दर्शाता है।ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं द्वारा संवेदनशील प्रश्नों (जैसे परिवार नियोजन) के उत्तर देने में हिचकिचाहट।दूरस्थ गाँवों तक पहुँचने में लॉजिस्टिक चुनौतियाँ प्रमुख सीमाएँ रहीं है।त्रिकोणीकरण (Triangulation) द्वारा प्राथमिक और द्वितीयक आँकड़ों की पुष्टि।नमूना विविधता और पिछड़े क्षेत्रों के संदर्भ में परिणामों का सामान्यीकरण।यह पद्धति खंड शोध की विश्वसनीयता और पारदर्शिता सुनिश्चित करता है, जिससे शिक्षा और जनसंख्या स्थिरीकरण के बीच संबंधों का एक संतुलित और व्यापक विश्लेषण संभव हो पाता है।

द्वितीयक आँकड़ों के लिए जनगणना 2011, बाँदा जिले की जनसांख्यिकीय, साक्षरता, और लिंगानुपात संबंधी आँकड़े प्राप्त किये गये हैं।राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण से प्रजनन दर, परिवार नियोजन के उपयोग के आँकड़ें प्राप्त किये गये हैं। उत्तर प्रदेश शिक्षा विभाग और राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशनकी नीतिगत रिपोर्ट्स, ऑनलाइन उपलब्ध साहित्य, पत्र-पत्रिकाओं आदि को शामिल किया गया है।

परिणाम और विश्लेषण – भारत में वर्ष 2011 के अनुसार कुल प्रजनन दर 2.2 बच्चे प्रति महिला है, जो वर्ष 2001 के 2.5 बच्चे प्रति महिला से कम है। ऐतिहासिक विश्लेषण से ज्ञात होता है कि वर्ष 1960 के दशक 6 बच्चे बच्चे प्रति महिला और वर्ष 1970 के दशक में 5 बच्चे प्रति महिला की तुलना में उल्लेखनीय कमी दर्शाता है। इस गिरावट के मुख्य कारणशिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच और गर्भनिरोधक उपयोग में वृद्धि हैं।

तालिका क्रमांक 1 : साक्षरता, दशकीय जनसंख्या वृद्धिदर एवं प्रजनन दर, वर्ष 1981-2021

क्र.	वर्ष	साक्षरता दर (बाँदा)			वृद्धि दर (बाँदा)	प्रजनन दर (उ.प्र.)
		कुल	पुरुष	महिला		
1	1981	23.30	35.99	8.61	29.11	5.0
2	1991	35.70	41.39	16.41	21.00	4.0
3	2001	54.40	69.28	36.78	21.42	2.1
4	2011	66.67	77.78	53.67	17.05	3.6
5	2021	72.50	80.50	63.50	13.74	2.7

स्त्रोत : विकीपीडिया, जनगणना 1981, 1991, 2001 एवं 2011 तथाhttps://www.ceicdata.com/en/india/vital-statistics-total-

fertility-rate/total-fertility-rate-uttar-pradesh

उपरोक्त तालिका (1) बाँदा जिले की साक्षरता दर (कुल, पुरुष, महिला) एवं दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर तथा उत्तर प्रदेश की प्रजनन दर (TFR) वर्ष 1981 से 2021तक को दर्शाती है जिससे ज्ञात होता है कि कुल साक्षरता वर्ष 1981 के 23.30 प्रतिशत से लगभग 'तीन गुना' बढ़कर वर्ष 2021 में 72.50 प्रतिशत हो गई है। यह एक सकारात्मक एवं उल्लेखनीय प्रगति को दर्शाता है।

वर्ष 1981 में महिला साक्षरता अत्यंत निम्न स्तर (8.61 प्रतिशत) से बढ़कर वर्ष 2021 में 63.50 प्रतिशत तक पहुँची है। यह लगभग 7.4 गुना की वृद्धि है, जो बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ जैसे प्रयासों का प्रभाव दर्शा सकती है।

वर्ष 1981 में पुरुष साक्षरता अत्यंत निम्न स्तर (35.99 प्रतिशत) से बढ़कर वर्ष 2021 में 80.50 प्रतिशत तक पहुँची है। वर्ष 1981 में पुरुष-महिला साक्षरता में 27.38 प्रतिशत का भारी अंतर था, जो वर्ष 2021 में घटकर 17.00 प्रतिशत रह गयाहै। यह सुधार महत्वपूर्ण है, परन्तु अभी भी लैंगिक समानता प्राप्त नहीं हुई है।

बाँदा जिले की दशकीय वृद्धि दर वर्ष 1981-91 में 29.11 प्रतिशत से घटकर वर्ष 2011-21 में 13.74 प्रतिशत हो गई है। यह लगभग आधी से भी कम रह गई है इसका मुख्य कारण यह है कि साक्षरता (विशेषकर महिला साक्षरता) में वृद्धि, स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार (शिशु मृत्यु दर कम होना), परिवार नियोजन कार्यक्रमों की पहुँच बढ़ना, आर्थिक विकास, शहरीकरण एवं जीवनशैली में बदलाव है।

उत्तर प्रदेश की TFR वर्ष 1981 में '5' से घटकर वर्ष 2001 में 2.1 (प्रतिस्थापन स्तर) तक पहुँच गई थी। यह एक बड़ी उपलब्धि थी। वर्ष 2011 में अप्रत्याशित वृद्धि 2001 के 2.1 से बढ़कर 2011 में '3.5' हो गई। यह वृद्धि चिंताजनक एवं अनापेक्षित है। इसके संभावित कारण हो सकते हैं कि कुछ विशिष्ट सामाजिक-आर्थिक समूहों में प्रजनन व्यवहार में परिवर्तन। परिवार नियोजन कार्यक्रमों में अस्थायी ठहराव या प्रभावहीनता। बाल विवाह या किशोर प्रजनन में वृद्धि। वर्ष 2021 में TFR पुन: घटकर 2.7 हो गई है जो वर्ष 2011 की तुलना में सुधार दर्शाता है परन्तु अभी भी प्रतिस्थापन स्तर (2.1) से ऊपर है।

साक्षरता (विशेषकर महिला) और प्रजनन दर के सम्बन्ध में देखा जाये तो आमतौर पर महिला साक्षरता बढ़ने से प्रजनन दर घटती है क्योंकि शिक्षित महिलाएँ स्वास्थ्य, परिवार नियोजन और करियर के प्रति अधिक जागरूक होती हैं। वर्ष 1981-2001 के आँकड़ें इस सहसंबंध का समर्थन करते हैं क्योंकि इस दौरान महिला साक्षरता 8.61 प्रतिशत से बढ़कर 36.78 प्रतिशत तथा TFR 5.0 से घटकर 2.1 हो गया है। हालाँकि,वर्ष 2011 केआँकड़ें इस प्रवृत्ति के विपरीत है क्योंकि महिला साक्षरता 53.67 प्रतिशततथा TFR 3.5 है जो यह इंगित करता है कि अन्य कारक (सामाजिक मानदंड, आर्थिक सुरक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच) भी प्रजनन व्यवहार को प्रभावित करते हैं। वर्ष 2021 में TFR पुन: घटकर 2.7 हो गया और महिला साक्षरता बढ़कर 63.50 प्रतिशत हो गयी जो फिर से इस सहसंबंध को दर्शाता है। इस प्रकार साक्षरता बढ़ने (विशेषकर महिला) के साथ जनसंख्या वृद्धि दर में लगातार गिरावटकी गई है जो सुसंगत प्रवृत्ति है।

चर्चा – वर्ष 2011 में TFR की अनापेक्षित वृद्धि के सटीक कारणों जैसे-आँकड़ों की गुणवत्ता, विशिष्ट जनसांख्यिकीय समूहों का व्यवहार, नीतिगत अंतराल आदि पर विस्तृत शोध की आवश्यकता है। यह भविष्य की जनसंख्या नीतियों के लिए महत्वपूर्ण होगा।साक्षरता में लैंगिक अंतर कम हुआ है परन्तु अभी भी 17 प्रतिशत का अन्तर है। महिला सशक्तिकरण और शिक्षा तक उनकी पहुँच बढ़ाने पर निरंतर ध्यान देना होगा, जिसका TFR और वृद्धि दर पर दीर्घकालिक सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।वर्ष 2021 TFR 2.7 है जिसे 2.1 तक लाने के लिए लक्षित हस्तक्षेप (विशेषकर उच्च TFR वाले क्षेत्रों/समूहों में), परिवार नियोजन सेवाओं की पहुँच और गुणवत्ता बढ़ाना तथा लड़कियों की शिक्षा पर जोर जारी रखना आवश्यक है जिससे प्रजनन दर को प्रतिस्थापन स्तर तक लाया जा सके। आर्थिक विकास, स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता (विशेषकर शिशु मृत्यु दर), बाल विवाह की स्थिति, प्रवास जैसे कारक भी जनसंख्या वृद्धि और प्रजनन दर को प्रभावित करते हैं।यहां बाँदा जिले के साक्षरता और वृद्धि दर के आंकड़े हैं, लेकिन TFR पूरे उत्तर प्रदेश की है। बाँदा जिले विशिष्ट TFR आँकडें होने पर अधिक सटीक सहसंबंध विश्लेषण संभव होता। इस सीमा को ध्यान में रखना होगा।

निष्कर्ष – बाँदा जिले में शिक्षा और जनसंख्या स्थिरीकरण के बीच संबंध स्पष्ट है, लेकिन इसकी प्रभावशीलता सामाजिक-आर्थिक समानता, बुनियादी ढाँचे के विकास, और सांस्कृतिक बदलाव पर निर्भर करती है।वर्ष 1981-2021 की अवधि में बाँदा जिले में साक्षरता (विशेषकर महिला साक्षरता) में उल्लेखनीय सुधार और जनसंख्या वृद्धि दर में सतत गिरावट के स्पष्ट प्रमाण हैं। उत्तर प्रदेश की प्रजनन दर में सामान्य गिरावट की प्रवृत्ति है, परन्तु 2011 में दर्ज अनपेक्षित वृद्धि एक महत्वपूर्ण शोध का विषय है। महिला शिक्षा का जनसंख्या स्थिरीकरण (कम वृद्धि दर और प्रतिस्थापन स्तर पर TFR से सकारात्मक संबंध है। हालाँकि वर्ष 2011 का आँकड़ों से ज्ञात होता है कि अन्य सामाजिक-आर्थिक कारक भी प्रभावी होते हैं। इसलिए भविष्य की नीतियों में साक्षरता अंतर को दूर करने, प्रजनन दर को प्रतिस्थापन स्तर तक लाने और वर्ष 2011 की TFR वृद्धि के कारणों को समझने पर केन्द्रित करना चाहिए। भविष्य के शोध में स्थानीय आँकड़ों संग्रह, नीतिगत हस्तक्षेपों का मूल्यांकन, और लैंगिक समानता पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. https://banda.nic.in/hi/
2. https://hi.wikipedia.org/wiki/ बाँदा-जिला-उत्तर-प्रदेश
3. i.bid.
4. i.bid.
5. शिक्षा नीतियों का विश्लेषण 3
6. शिक्षा नीतियों का विश्लेषण 3
7. बाँदा जिले की सामाजिक-आर्थिक रिपोर्ट्स 1113
8. https://www.amarujala.com/columns/blog/india-leads-in-population-despite-falling-fertility-rate-2025-06-12
9. भारत सरकार,'राष्ट्रीय जनसंख्या नीति, 2000', स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, नई दिल्ली।
10. राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन,'राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण-5

(2019- 21)', कार्यान्वयन रिपोर्ट।
11. उत्तर प्रदेश सरकार,'जिला स्वास्थ्य अधिकारी (बाँदा) वार्षिक रिपोर्ट 2023-24', स्वास्थ्य विभाग।
12. नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ डेमोग्राफी,'एजुकेशनल डिस्पैरिटीज एण्ड फर्टिलिटी ट्रांजिशन इन रूरल इंडिया', रिसर्च बुलेटिन नं. 21, 2024
13. सिन्हा, आर.के. एवं शर्मा, पी.,'भारत में जनांकिकीय लाभांश: शिक्षा का सहसम्बन्ध', जर्नल ऑफ डेवलपमेंट स्टडीज, खण्ड 38(4), पृ. 56-72, 2022
14. उत्तर प्रदेश शिक्षा विभाग,'जिला शैक्षिक सूचकांक (बाँदा) 2024', लखनऊ।

****